वन उत्पादकता संस्थान, रांची

हरित कौशल विकास कार्यक्रम (GSDP)

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित

"बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन" पर प्रशिक्षण

(दिनांक: 10.02.2020 से 14.03.2020)

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित हरित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत "बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन" विषय पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा छः सप्ताह (लगभग 200 घंटे) का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उदघाटन संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने उदघाटन सत्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना "कौशल विकास" कि चर्चा करते हुए मंत्रालय द्वारा हरित कौशल विकास कार्यक्रम के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की विस्तार से चर्चा की एवं कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। झारखंड, बिहार तथा पश्चिम बंगाल के छात्र, किसान एवं उद्धमी सहित 25 प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय ने बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन के विभिन्न विषयों पर चर्चा की एवं इसकी उपयोगिता, रोग निदान , उत्तक संवर्धन, बांस संसाधन,मिट्टी की गुणवत्ता, मूल्यवर्धन आदि विषयों पर प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी जानकारी दिये जाने का अहवाहन किया। निदेशक ने प्रतिभागियों से अपील किया कि प्रशिक्षण के उपरान्त वे अपना कौशल विकास करें एवं समाज के अंतिम वर्ग को कौशल विकास के लिए प्रोत्साहित करे। उन्होने स्पष्ट किया कि जनसंख्या के अनुपात में रोजगार सृजन आपकी क्षमता पर निर्भर करता है। वैश्विक चुनौती का सामना करने के लिए युवाओं में कौशल क्षमता निर्माण आवश्यक है।

कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक सह समुह समन्वयक अनुसंधान डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान दिये जाने वाले विभिन्न पाठ्यक्रम विषयों की विस्तृत जानकारी दी एवं प्रतिभागियों को इस दौरान अनुशासन बनाए रखने एवं संस्थान के संसाधन का तय मानक के भीतर उपयोग करने का निर्देश दिया। उन्होने बताया कि बांस का उपयोग मानव जीवन के आरम्भ से अन्त तक है और आवश्यकता के अनुपात में देश में बांस संसाधन बहुत कम है। उन्होने प्रशिक्षण के दौरान सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के अलावा प्रयोगिक प्रशिक्षण एवं मूल्यवर्धन हेतु शिल्पकला का प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। पाठ्यक्रम

निदेशक ने स्पष्ट किया कि आंतरिक विशेषज्ञों के अलावा वाह्य विशेषज्ञों की भी व्यवस्था की गई है ताकि महत्तम विषयों को प्रशिक्षण में शामिल किया जा सके साथ ही साथ विभिन्न प्रदेशों से दक्ष बांस शिल्पकार/कारीगर प्रतिभागियों को हुनरमंद बनाने में मदद करेंगे। कार्यक्रम का संचालन संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती रूबी सुसाना कुजूर ने किया।

इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शरद तिवारी, डॉ. अनिमेष सिन्हा, श्री संजीव कुमार, श्री आदित्य कुमार, श्रीमती रूबी सुसाना कुजूर तथा समस्त तकनीकी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

तकनीकी एवं प्रशिक्षण सत्र

दिनांक 10.02.2020 से 14.03.2020 तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की तकनीकी सत्र की शुरूआत श्री रवि शंकर प्रसाद, मु.त.अ. के "*भारत में पाये जाने वाले बांस के प्रकार*" विषय से की गई। तत्पश्चात विभिन्न आंतरिक एवं वाह्य विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। आंतरिक विशेषज्ञ में डॉ. नितिन कुलकर्णी (*समन्वित कीट प्रबंधन*), डॉ. योगेश्वर मिश्रा (*बांस पौधशाला एवं प्रबंधन, भारत में बांस संसाधन, बांस प्रवर्धन की विधियाँ, बांस रोपण एवं प्रबंधन, बांस बखार प्रबंधन*), डॉ. शरद तिवारी (*बांस सर्वेक्षण में भूगोलीय सूचना तंत्र, NICHE*), डॉ. अनिमेष सिन्हा (*उत्तक संवर्धन द्वारा बांस प्रवर्धन, उत्तक संवर्धन तकनीक, उत्तक संवर्धन मीडिया*), श्री संजीव कुमार (*अकाष्ट वनोत्पाद एवं बांस plus tree selection, बांस बखार मापन एवं बायोमास*), श्री आदित्य कुमार (*कृषि वानिकी एवं बांस, बांस बीज संरक्षण तकनीक, बांस रोपण माडल*), श्रीमती रूबी सुसाना कुजूर (*बांस उत्पाद एवं मूल्यवर्धन, बांस के उपयोग, सौन्दर्य प्रसाधन में बांस*), श्री रवि शंकर प्रसाद (*बांस के पहचान, विभिन्न प्रजाति के बांस के उपयोग, बांस एवं उसकी चारित्रिक पहचान, बांस बीज तकनीक, पौधशाला एवं बांस रोपण*), डॉ. शंभुनाथ मिश्रा (*बांस प्रबंधन में GIS एवं GPS का उपयोग, Distribution of Hill Bamboo using GIS based species distribution modeling*) आदि ने प्रशिक्षण दिया। वहीं बाह्य विशेषज्ञों में साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची के डॉ. विमलेंदु कुमार (*खाद्य पदार्थों में बांस के उपयोग, बांस के रासायनिक संगठन, बांस के औषधीय उपयोग*), डॉ. पी.बी. मेशराम, सेवा निवृत वैज्ञानिक-जी (*बांस के दुश्मन कीट का जैविक नियंत्रण, जैविक खाद उत्पादन एवं उपयोग, बांस के दुश्मन कीट एवं उसका प्रबंधन*), डॉ. विजयकांत पाण्डेय, साईनाथ विश्वविद्यालय (*बांस की जैविक विविधता एवं इसका महत्व*) आदि में अपने-अपने विषय पर प्रशिक्षण दिया। इसके साथ-साथ कई अन्य विशेषज्ञों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र के विषयों में प्रशिक्षण दिया गया। श्री एस.एन. वैद्य एवं श्री बी.डी. पंडित ने लाह के संक्षिप्त परिचय एवं

प्रक्रियाओं से अवगत कराया। सैद्धांतिक प्रशिक्षण के अलावा पयोगशाला में भी श्री सतीश कुमार, श्री राकेश कुमार, श्री अतनु सरकार ने मृदा परीक्षण, उत्तक संवर्धन आदि का प्रशिक्षण दिया एवं प्रयोग करवाया।

प्रायोगिक कार्य स्वयं प्रतिभागियों द्वारा करवाया गया। श्री एस.एन. वैद्य, श्री बी.डी. पंडित, श्री सूरज कुमार, श्री सुभाष प्रसाद, श्री महेश कुमार द्वारा प्रशिक्षणार्थियों से बांस पौधशाला, बांस रोपण आदि के विभिन्न प्रायोगिक कार्य बताया गया एवं करवाया गया। विभिन्न विधियों द्वारा बांस तैयार करने, रोपण करने का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। श्री बी.डी. पंडित एवं श्री सूरज कुमार द्वारा प्रतिभागियों को वन अनुसंधान एवं प्रसार केंद्र जदुआ, हाजीपुर ले जाया गया जहां बांस हस्तशिल्पकार श्री मनोज कुमार मल्लिक द्वारा हस्तशिल्प निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया। श्री दीनानाथ पाण्डेय एवं श्री एच.एस. विध्यार्थी द्वारा केंद्र स्थित अगरबत्ती निर्माण यूनिट के विभिन्न यंत्र चालन एवं निर्माण प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों द्वारा अनेकों हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्माण किया गया जिसे श्री बी.डी. पंडित एवं श्री सूरज कुमार की देखरेख में वन उत्पादकता संस्थान, रांची लाया गया। श्री महाबीर महली द्वारा संस्थान के प्रांगण में भी बांस हस्तशिल्प कला का प्रशिक्षण दिया गया। श्री एस.एन. वैद्य एवं श्री निसार आलम द्वारा प्रतिभागियों को विविध कौशल संस्थान लोहान्ती दुमका का भ्रमण कराया गया। शिल्पकला निर्माण में प्रतिभागियों ने काफी रूचि दिखाई एवं कई स्वनिर्मित उत्पाद तैयार किया।

इस प्रकार 35 दिनों में सभी 25 प्रतिभागियों को आंतरिक एवं वाह्य विशेषज्ञों द्वारा बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन के विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण देकर उनमें कौशल क्षमता विकास किया गया। सैद्धांतिक, प्रायोगिक एवं प्रदर्शनी प्रशिक्षण के माध्यम से उनके कौशल क्षमता का विकास किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संचालित "बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन" विषय पर पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 14.03.2020 को आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने प्रतिभागियों की लगनशीलता की सराहना की। उन्होने बताया कि बांस न केवल औध्योगिक उपयोगिता रखता है बल्कि ग्रामीण एवं जनजातीय जीवनशैली का एक अभिन्न अंग है। प्रतिभागियों द्वारा निर्मित बांस उत्पाद की सराहना की लेकिन कहा कि और अधिक उत्पाद निर्मित हो सकते थे। उन्होनें प्रतिभागियों के उज्जवल भविष्य की कामना की एवं अपने कौशल से समाज को लाभान्वित करने का आग्रह किया। पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने प्रतिभागियों द्वारा निर्मित बांस उत्पाद की सराहना की

एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होनें आशा व्यक्त किया कि इस प्रशिक्षण से प्रतिभागियों के कौशल क्षमता मे निश्चित रूप से विकास होगा। बांस की उपलब्धता सतत बनी रहे इसके लिए बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन पाठ्यक्रम मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर निदेशक, पाठ्यक्रम निदेशक एवं श्री सच्चिदानंद वैध्य ने डॉ. योगेश्वर मिश्रा और सहभागियों द्वारा लिखित तकनीकी पुस्तक "बांस प्रवर्धन एवं प्रबंधन" का विमोचन किया। प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार रखे एवं प्रशिक्षण की प्रशंसा की। उन्होनें इसी तरह के अन्य विषयों पर भी संस्थान द्वारा प्रशिक्षण कराये जाने का आग्रह किया एवं प्रशिक्षण से प्राप्त कौशल से समाज को लाभान्वित करने का संकल्प लिया।

इस पूरे प्रशिक्षण कार्यक्रम में विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन. वैध्य, श्री बी.डी. पंडित, श्री सूरज कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल संचालन में श्री शंभुनाथ मिश्रा, श्री रविशंकर प्रसाद, श्री निसार आलम, श्री राम कुमार महतो, श्री सुभाष प्रसाद, श्री बसंत कुमार, श्री मनीष कुमार, श्री बिनोद राम, श्री महेश कुमार तथा संस्थान के अन्य कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक का स्वागत एवं तकनीकी पुस्तक विमोचन

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्दघाटन सत्र

बांस विशेषज्ञ द्वारा बांस प्रवर्धन एवं प्रवंधन पर प्रशिक्षण

बांस विशेषज्ञ द्वारा बांस प्रवर्धन एवं प्रवंधन पर प्रशिक्षण

बांस पौधशाला भ्रमण एवं बांस पौध लगाने की विधि

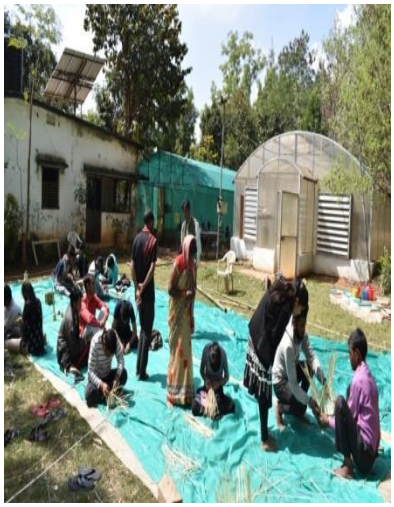

बांस हस्त शिल्प काल प्रशिक्षण

बांस विशेषज्ञ द्वारा बांस प्रवर्धन एवं प्रवंधन पर प्रशिक्षण

मृदा प्रयोगशाला में मृदा जांच प्रशिक्षण

बांस हस्त कला प्रशिक्षण एवं LIMS Institute Dumka में क्षेत्र भ्रमण

बांस द्वारा निर्मित सामग्री

नाल कटिंग द्वारा बांस प्रवर्धन एवं मृदा तत्व जांच प्रशिक्षण

बांस विशेषज्ञ द्वारा बांस प्रवर्धन एवं प्रवंधन तथा कीट प्रवंधन पर प्रशिक्षण

उत्तक संबर्धन प्रयोगशाला एवं उत्तक संबर्धन द्वारा बांस प्रवर्धन काक्षेत्र भ्रमण

बांस हस्त शिल्पकार (गोलबंधा) दुमका , झारखंड क्षेत्र का भ्रमण

हरित कौशल विकास कार्यक्रम प्रशिक्षण का समापन सत्र संबोधन एवं प्रमाण पत्र वितरण

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा विभिन्न बांस के निर्मित सामग्री एवं बांस निर्मित सामग्री का अवलोकन

समूह तस्वीर